सीबीएसई कक्षा -12 हिंदी कोर

महत्वपूर्ण प्रश्न

पाठ – 11

महादेवी वर्मा (भक्तिन)

<u>महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर</u>

1. 'भक्तिन' पाठ के आधार पर भक्तिन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'भक्तिन' के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

पाठ के आधार पर भक्तिन की तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- 'भक्तिन' लेखिका की सेविका है। लेखिका ने उसके जीवन-संघर्ष का वर्णन किया है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

(क) व्यक्तित्व-भक्तिन अधेड़ उम्र की महिला है। उसका कद छोटा व शरीर दुबला-पतला है। उसके होंठ पतले हैं तथा आँखें छोटी हैं।

(ख) परिश्रमी-भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं आदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।

(ग) स्वाभिमानिनी-भक्तिन बेहद स्वाभिमानी थी। पिता की मृत्यु पर विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वारा अपमानित करने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।

(घ) महान सेविका-भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण थे। लेखिका ने उसे हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली बताया है। वह छाया की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के लिए भी तैयार है। वह युद्ध, यात्रा अदि में हर समय उसके साथ रहना चाहती है।

2. भक्तिन की पारिवारिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- भक्तिन झूँसी गाँव के एक गोपालक की इकलौती सन्तान थी। इसकी माता का देहांत हो गया था। फलतः भक्तिन की देखभाल विमाता ने किया। पिता का उस पर अगाध स्नेह था। पाँच वर्ष की आयु में ही उसका विवाह हँडिया गाँव के एक ग्वाले की सबसे छोटे

पुत्र के साथ कर दिया गया। नौ वर्ष की आयु में उसका गौना हो गया। विमाता उससे ईर्ष्या रखती थी। उसने पिता की बीमारी का समाचार तक नहीं भेजा।

3. भक्तिन के ससुरालवालों का व्यवहार कैसा था?

उत्तर- भक्तिन के ससुरालवालों का व्यवहार उसके प्रति अच्छा नहीं था। घर की महिलाएँ चाहती थी कि भक्तिन का पति उसकी पिटाई करे। वे उस पर रौब जमाना चाहती थीं। इसके अतिरिक्त, भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया, जबकि उसके सास व जेठानियों ने लड़के पैदा किए थे। इस कारण उसे सदैव प्रताड़ित किया जाता था। पति की मृत्यु के बाद उन्होंने भक्तिन पर पुनर्विवाह के लिए दबाव डाला। उसकी विधवा लड़की के साथ जबरदस्ती की। अंत में, भक्तिन को गाँव छोड़ना पड़ा।

4. भक्तिन का जीवन सदैव दुखों से भरा रहा। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भक्तिन का जीवन प्रारंभ से ही दुखमय रहा। बचपन में ही माँ गुजर गई। विमाता से हमेशा भेदभावपूर्ण व्यवहार मिला। विवाह के बाद तीन लड़कियाँ उत्पन्न करने के कारण उसे सास व जेठानियों का दुर्व्यवहार सहना पड़ा। किसी तरह परिवार से अलग होकर समृद्धि पाई, परंतु भाग्य ने उसके पति को छीन लिया। ससुराल वालो ने उसकी संपत्ति छीननी चाहि, परंतु वह संघर्ष करती रही। उसने बेटियों का विवाह किया तथा बड़े जमाई को घर जमाई बनाया। शीघ्र ही उसका देहांत हो गया। इस तरह उसका जीवन शुरू से अंत तक दुखों से भरा रहा।

5. लछमिन के पैरों के पंख गाँव की सीमा में आते ही क्यों झड़ गए?

उत्तर- लछमिन की सास का व्यवहार सदैव कटु रहा। जब उसने लछमिन को मायके यह कहकर भेजा की तुम बहुत दिन से मायके नहीं गई हो, जाओ देखकर आ जाओ तो यह उसके लिए अप्रत्याशित था। उसके पैरों में पंख से लग गए थे। ख़ुशी-ख़ुशी जब वह मायके के गाँव की सीमा में पहुँची तो लोगों ने फुसफुसाना प्रारंभ कर दिया कि हाय! बेचारी लछमिन अब आई है। लोगों की नजरों से सहानुभूति झलक रही थी। उसे इस बात का अहसास नहीं था कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है या वे गंभीर बीमार थे। विमाता ने उसके साथ अन्याय किया था। इसलिए वह हतप्रभ थी। उसकी तमाम ख़ुशी समाप्त हो गई।

6. लछमिन ससुरालवालों से अलग क्यों हुई? इसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर- लछमिन मेहनती थी। तीन लड़कियों को जन्म देने के कारण सास व जेठानियाँ उसे सदैव प्रताड़ित करती थीं। वह व उसके बच्चे घर, खेत व पशुओं का सारा काम करते थे, परंतु उन्हें खाने तक में भेदभावपूर्ण व्यवहार का समाना करना पड़ता था। लड़कियों को दोयम दर्जे का खाना मिलता था। उसकी दशा नौकरों जैसी थी। अतः उसने ससुरालवालों से अलग होकर रहने का फैसला किया।

अलग होते समय उसने अपने ज्ञान के कारण खेत, पशु, घर आदि में अच्छी चीजें ले ली। परिश्रम के बलबूते आर उसका घर समृद्ध हो गया।

7. भक्तिन व लेखिका के बीच कैसा संबंध था?

उत्तर- लेखिका व भक्तिन के बीच बाहरी तौर पर सेवक-स्वामी का संबंध था, परंतु व्यवहार में यह लागू नहीं होता था। महादेवी उसकी कुछ आदतों से परेशानी थीं, जिसकी वजह से यदा-कदा उसे घर चले जाने को कह देती थी। इस आदेश को वह हँसकर टाल देती थी। दूसरे, वह नौकर कम, जीवन की धूप-छाँव अधिक थी। वह लेखिका की छाया बनकर घुमती थी। वह आने-जाने वाले, अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब व आम की तरह पृथक अस्तित्व रखती तथा हर सुख-दुख में साथ रहती थी।

8. लेखिका के परिचित के साथ भक्तिन कैसा व्यवहार करत थी?

उत्तर- लेखिका के पास नेक साहित्यिक बंधु आते रहते थे, परंतु भक्तिन के मन में कोई विशेष सम्मान नहीं था। वह उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती जैसा लेखिका करती थी। उसके सम्मान की भाषा, लेखिका के प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है और सद्भाव उनके प्रति लेखिका के सद्भाव से निश्चित होता है।

भक्तिन उन्हें आकार-प्रकार व वेशभूषा से स्मरण करती है और किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा। कवि तथा कविता के संबंध में उसका ज्ञान बढ़ा है, पर आदरभाव नहीं।

9. भक्तिन के आने से लेखिका अपनी असुविधाएँ क्यों छिपाने लगीं?

उत्तर- भक्तिन के आने से लेखिका के खान-पान में बहुत परिवर्तन आ गए। उसे मीठा, घी आदि पसंद था। उसके स्वास्थ्य को लेकर उसके परिवार वाले भी चिंतित रहते थे। घरवालों ने उसके लिए अलग खाने की व्यवस्था कर दी थी। अब वह मीठे व घी से विरक्ति करने लगी थी। यदि लेखिका को कोई असुविधा भी होती थी तो वह उसे भक्तिन को नहीं बताती थी। भक्तिन ने उसे जीवन की सरलता का पाठ पढ़ा दिया।

10. लछमिन को शहर क्यों जाना पड़ा?

उत्तर- लछमिन के बड़े दामाद की मृत्यु हो गई। उसके स्थान पर परिवारवालों ने जिठौत के साले को जबरदस्ती विधवा लड़की का पति बनवा दिया। पारिवार्क द्वेष बढ़ने से खेती-बाड़ी चौपट हो गई। स्थिति यहाँ तक आ गई कि लगान भी नहीं चुकाया गया। जब जमींदार ने लगान न पहुँचाने पर भक्तिन को दिनभर कड़ी धूप में खड़ा रखा तो उसके स्वाभिमानी हृदय को गहरा आघात लगा। यह उसकी कर्मठता के लिए सबसे बड़ा कलंक बन गया। इस अपमान के कारण वह दूसरे दिन कमाई के विचार से शहर आ गई।

11. कारागार के नाम से भक्तिन पर क्या प्रभाव पड़ता था? वह जेल जाने के लिए क्यों तैयार हो गई?

उत्तर- भक्तिन को कारागार से बहुत भय लगता था। वह उसे यमलोक के समान समझती थी। कारागार की ऊँची दीवारों को देखकर कर चकरा जाती थी। जब उसे पता चला कि महादेवी जेल जा रही हैं तो वह उनके साथ जेल जाने के लिए तैयार हो गई। वह महादेवी के बिना अलग रहने की कल्पना मात्र से परेशानी हो उठती थी।

12. महादेवी ने भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में बाँटा?

उत्तर- महादेवी ने भक्तिन के जीवन को चार परिच्छेदों में बाँटा जो निम्नलिखित हैं-

प्रथम-विवाह से पूर्व
द्वितीय-ससुराल में सधवा के रूप में
तृतीया-विधवा के रूप में
चतुर्थ-महादेवी की सेवा में

13. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा पति क्यों थोपा गया? इस घटना के विरोध में दो तर्क दीजिए।

उत्तर- भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा पति इसलिए थोपा गया क्योंकि भक्तिन की विधवा बेटी के साथ उसके ताऊ के लड़के के साले ने जबरदस्ती करने की कोशिश की थी। लड़की ने उसकी खूब पिटाई की परंतु पंचायत ने कोई भी तर्क न सुनकर एकतरफा फैसला सूना दिया। इसके विरोध में दो तर्क-

(i) महिला के मानवाधिकार का हन होता है।

(ii) योग्य लड़की का विवाह अयोग्य लड़के के साथ हो जाता है।

14. 'भक्तिन' अनेक अवगुणों के होते हुए भी महादेवी जी के लिए अनमोल क्यों थी?

उत्तर- अनेक अवगुणों के होते हुए भी भक्तिन महादेवी वर्मा के लिए इसलिए अनमोल थी क्योंकि-

(i) भक्तिन में सेवाभाव कूट-कूट कर भरा था।

(ii) भक्तिन लेखिका के हर कष्ट को स्वयं झेल लेना चाहती थी।

(iii) वह लेखिका द्वारा पैसों की कमी का जिक्र करने पर अपने जीवनभर की कमाई उसे दे देना चाहती है।

(iv) भक्तिन की सेवा और भक्तिन में निःस्वार्थ भाव था। वह अनवरत और दिन-रात लेखिका की सेवा करना चाहती थी।

15. महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(i) परिश्रमी-परिश्रमी भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं अदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।

(ii) स्वाभिमानिनी-भक्तिन बेहद स्वाभिमानी थी। पिता की मृत्यु पर विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वार अपमानित करने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।

(iii) महान सेविका-भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण थे। लेखिकाने उसे हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली बताया है। वह छाया

की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के लिए भी तैयार है। वह युद्ध, यात्रा आदि में हर समय उसके साथ रहना चाहती है।

पाठ आधारित अन्य प्रश्नोत्तर

1. भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था? वह अपने नाम को क्यों छुपाना चाहती थी ?

उत्तर- भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था, हिन्दुओं के अनुसार लक्ष्मी धन की देवी है। चूँकि भक्तिन गरीब थी। उसके वास्तविक नाम के अर्थ और उसके जीवन के यथार्थ में विरोधाभास है, निर्धन भक्तिन सबको अपना असली नाम लक्ष्मी बताकर उपहास का पात्र नहीं बनना चाहती थी इसलिए वह अपना असली नाम छुपाती थी।

2. लेखिका ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन क्यों रखा ?

उत्तर- घुटा हुआ सिर, गले में कंठी माला और भक्तों की तरह सादगीपूर्ण वेशभूषा देखकर महादेवी वर्मा ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन रख दिया। यह नाम उसके व्यक्तित्व से पूर्णतः मेल खाता था।

3. भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में विभाजित किया गया है ?

उत्तर- भक्तिन के जीवन को चार भागों में बाँटा गया है-

- **पहला परिच्छेद**- भक्तिन का बचपन, माँ की मृत्यु विमाता के द्वारा भक्तिन का बाल-विवाह करा देना।
- **द्वितीय परिच्छेद**- भक्तिन का वैवाहिक जीवन, सास तथा जिठानियों का अन्यायपूर्ण व्यवहार, परिवार से अलगौझा कर लेना।
- **तृतीय परिच्छेद**- पति की मृत्यु विधवा के रूप में संघर्षशील जीवन।
- **चतुर्थ परिच्छेद**- महादेवी वर्मा की सेविका के रूप में।

4. भक्तिन पाठ के आधार पर भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में किये जाने वाले भेदभाव का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में भेदभाव किया जाता है। लड़कियों को खोटा सिक्का या पराया धन माना जाता है। भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया, जिस कारण उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ती थी। सास और जिठानियाँ आराम फरमाती थी क्योंकि उन्होंने लड़के पैदा किए थे और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पडता था। भक्तिन और उसकी बेटियों को रूखा-सूखा मोटा अनाज खाने को मिलता था जबकि उसकी जिठानियाँ और उनके काले-कलूटे बेटे दूध-मलाई राब-चावल की दावत उड़ाते थे

5. भक्तिन पाठ के आधार पर पंचायत के न्याय पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- भक्तिन की बेटी के सन्दर्भ में पंचायत द्वारा किया गया न्याय, तर्कहीन और अंधे कानून पर आधारित है। भक्तिन के जिठौत ने संपति के लालच में षडयंत्र कर भोली बच्ची को धोखे से जाल में फंसाया। पंचायत ने निर्दोष लड़की की कोई बात नहीं सुनी और

एक तरफ़ा फैसला देकर उसका विवाह जबरदस्ती जिठौत के निकम्मे तीतरबाज साले से कर दिया। पंचायत के अंधे कानून से दुष्टों को लाभ हुआ और निर्दोष को दंड मिला।

6. भक्तिन की पाक-कला के बारे में टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- भक्तिन को ठेठ देहाती, सादा भोजन पसंद था। रसोई में वह पाक छूत को बहुत महत्व देती थी। सुबह-सवेरे नहा-धोकर चौके की सफाई करके वह द्वार पर कोयले की मोटी रेखा खींच देती थी। किसी को रसोईघर में प्रवेश करने नहीं देती थी। उसे अपने बनाए भोजन पर बड़ा अभिमान था। वह अपने बनाए भोजन का तिरस्कार नहीं सह सकती थी।

7. सिद्ध कीजिए कि भक्तिन तर्क-वितर्क करने में माहिर थी।

उत्तर- भक्तिन तर्कपटु थी। केश मुँडाने से मना किए जाने पर वह शास्त्रों का हवाला देते हुए कहती है 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध'। घर में इधर-उधर रखे गए पैसों को वह चुपचाप उठा कर छुपा लेती है, टोके जानेपर वह वह इसे चोरी नही मानती बल्कि वह इसे अपने घर में पड़े पैसों को सँभालकर रखना कहती है। पढाई-लिखाई से बचने के लिए भी वह अचूक तर्क देती है कि अगर मैं भी पढ़ने लगूँ तो घर का काम कौन देखेगा?

8. भक्तिन का दुर्भाग्य भी कम हठी नही था , लेखिका ने ऐसा क्यों कहा है ?

उत्तर- भक्तिन का दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता था

1- बचपन में ही माँ की मृत्यु।

2- विमाता की उपेक्षा।

3- भक्तिन (लक्ष्मी) का बालविवाह।

4- पिता का निधन।

5- तीन-तीन बेटियों को जन्म देने के कारण सास और जिठानियों के द्वारा भक्तिन की उपेक्षा।

6- पति की असमय मृत्यु।

7- दामाद का निधन और पंचायत के द्वारा निकम्मे तीतरबाज युवक से भक्तिन की विधवा बेटी का जबरन विवाह।

8- लगान न चुका पाने पर जमींदार के द्वारा भक्तिन का अपमान।

9. भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन पर कैसे प्रभावित किया ?

उत्तर- भक्तिन के साथ रहकर महादेवी की जीवन-शैली सरल हो गयी, वे अपनी सुविधाओं की चाह को छिपाने लगीं और असुविधाओं को सहने लगीं। भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खिलाकर उनका स्वाद बदल दिया। भक्तिन मात्र एक सेविका न होकर

महादेवी की अभिभावक और आत्मीय बन गयी। भक्तिन, महादेवी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका है जिसे लेखिका नहीं खोना चाहती।

10. भक्तिन के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- महादेवी वर्मा की सेविका भक्तिन के व्यक्तित्व की विशेषताएं निम्नांकित हैं-

- समर्पित सेविका
- स्वामिमानी
- तर्कशीला
- परिश्रमी
- संघर्षशील

11. भक्तिन के दुर्गुणों का उल्लेख करें।

उत्तर- गुणों के साथ-साथ भक्तिन के व्यक्तित्व में अनेक दुर्गुण भी निहित है-

1. वह घर में इधर-उधर पड़े रुपये-पैसे को भंडार घर की मटकी में छुपा देती है और अपने इस कार्य को चोरी नहीं मानती।

2. महादेवी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन बात को इधर-उधर करके बताने को झूठ नही मानती। अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए वह तर्क-वितर्क भी करती है।

3. वह दूसरों को अपनी इच्छानुसार बदल दना चाहती है पर स्वयं बिलकुल नही बदलती।

12. निम्नांकित भाषा-प्रयोगों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- • पहली कन्या के दो और संस्करण कर डाले- भक्तिन ने अपनी पहली कन्या के बाद उसके जैसी दो और कन्याएँ पैदा कर दी अर्थात भक्तिन के एक के बाद एक तीन बेटियाँ पैदा हो गयीं।

• खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी- आज भी अशिक्षित ग्रामीण समाज में बेटियों को खोटा सिक्का कहा जाता है। भक्तिन ने एक के बाद एक तीन बेटियाँ पैदा कर दी इसलिए उसे खोटे सिक्के को ढालने वाली मशीन कहा गया।

13. भक्तिन पाठ में लेखिका ने समाज की किन समस्याओं का उल्लेख किया है ?

उत्तर- भक्तिन पाठ के माध्यम से लेखिका ने भारतीय ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओों का उल्लेख किया है

1. लड़के-लड़कियों में किया जाने वाला भेदभाव
2. विधवाओं की समस्या
3. न्याय के नाम पर पंचायतों के द्वारा स्त्रियों के आनवाधिकार को कुचलना

गद्यांश-आधारित अर्थग्रहण संबंधित प्रश्नोत्तर

परिवार और परिस्थितियों के कारण स्वभाव में जो विषमताएँ उत्पन्न हो गई हैं, उनके भीतर से एक स्नेह और सहानुभूति की आभा फूटती रहती है, इसी से उसके संपर्क में आनेवाले व्यक्ति उसमें जीवन की सहज मार्मिकता ही पाते हैं। छात्रावास की बालिकाओं में से कोई अपनी चाय बनवाने के लिए देहली पर बैठी रहती हैं, कोई बाहर खड़ी मेरे लिए नाश्ते को चखकर उसके स्वाद की विवेचना करती रहती है। मेरे बाहर निकलते ही सब चिड़ियों के समान उड़ जाती हैं और भीतर आते ही यथास्थान विराजमान हो जाती है। इन्हें आने में रूकावट न हो, संभवतः इसी से भक्तिन अपना दोनों जून का भोजन सवेरे ही बनाकर ऊपर के आले में रख देती है और खाते समय चौके का एक कोना धोकर पाक छूत के सनातन नियम से समझौता कर लेती है।

मेरे परिचितों और साहित्यिक बंधुओं से भी भक्तिन विशेष परिचित है, पर उनके प्रति भक्तिन के सम्मान की मात्रा, मेरे प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्भाव से निश्चित होता है। इस संबंध में भक्तिन की सहज बुद्धि विस्मित कर देने वाली है।

(क) भक्तिन का स्वभाव परिवार में रहकर कैसा हो गया है ?

उत्तर- विषम परिस्थिति जन्य उसके उग्र, हठी और दुराग्रही स्वभाव के बावजूद भक्तिन के भीतर स्नेह और सहानुभूति की आभा फूटती रहती है। उसके संपर्क में आने वाले व्यक्ति उसमें जीवन की सहज मार्मिकता ही पाते हैं।

(ख) भक्तिन के पास छात्रावास की छात्राएँ क्यों आती हैं ?

उत्तर- भक्तिन के पास कोई छात्रा अपनी चाय बनवाने आती है और देहली पर बैठी रहती है, कोई महादेवी जी के लिए बने नाश्ते को चखकर उसके स्वाद की विवेचना करती रहती है। महादेवी को देखते ही सब छात्राएँ भाग जाती हैं, उनके जाते ही फिर वापस आ जातीं हैं भक्तिन का सहज-स्नेह पाकर चिड़ियों की तरह चहचहाने लगती हैं।

(ग) छात्राओं के आने में रुकावट न डालने के लिए भक्तिन ने क्या उपाय क्रिया ?

उत्तर- छात्राओं के आने में रुकावट न डालने के लिए भक्तिन ने अपने पाक-छूत के नियम से समझौता कर लिया। भक्तिन अपना दोनों वक्त का खाना बनाकर सुबह ही आले में रख देती और खाते समय चौके का एक कोना धोकर वहाँ बैठकर खा लिया करती थी ताकि छात्राएँ बिना रोक-टोक के उसके पास आ सकें।

(घ) साहित्यकारों के प्रति भक्तिन के सम्मान का क्या मापदंड है ?

उत्तर- भक्तिन महादेवी के साहित्यिक मित्र के प्रति सद्भाव रखती थी जिसके प्रति महादेवी स्वयं सद्भाव रखती थी। वह सभी से परिचित है, पर उनके प्रति सम्मान की मात्रा महादेवी जी के सम्मान की मात्रा पर निर्भर करती है। वह एक अद्भुत ढंग से जान लेती थी कि कौन कितना सम्मान करता है। उसी अनुपात में उसका प्राप्य उसे देती थी।

सीबीएसई कक्षा -12 हिंदी कोर

महत्वपूर्ण प्रश्न

पाठ – 12

जैनेंद्र कुमार (बाज़ार दर्शन)

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइए कि पैसे की पावर का रस किन दो रूपों में प्राप्त किया जाता है?

उत्तर- पैसे की पावर का रस निम्नलिखित रूपों में प्रात किया जा सकता है-

(i) मकान, संपत्ति, कोठी, कार, सामान आदि देखकर।

(ii) संयमी बनकर पैसे की बचत करके। इससे मनुष्य पैसे के गर्व से फूला रहता है तथा उसे किसी की सहायता की ज़रूरत नहीं होती।

2. कैसे लोग बाज़ार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दे सकते हैं? वे 'बाज़ारूपन' को कैसे बढ़ाते हैं?

उत्तर- लेखक कहता है कि समाज में कुछ लोग क्रय-शक्ति के बल में बाज़ार से वस्तुएँ खरीदते हैं, परंतु उन्हें अपनी ज़रूरत का पता नहीं होता। ऐसे लोग बाज़ार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे धन के बल पर बाज़ार में कपट को बढ़ावा देते हैं। वे समाज में असंतोष बढ़ाते हैं। सामान्य लोगों के सामने अपनी क्रय-शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। वे शान के लिए उत्पाद खरीदते हैं। इस परकार से वे बाज़ारूपन को बढ़ाते हैं।

3. बाज़ार का जादू क्या है? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

उत्तर- बाज़ार के तड़क-भड़क और रूप-सौंदर्य से जब ग्राहक खरीददारी करने को मजबूर हो जाता है तो उसे बाज़ार का जादू कहते हैं। बाज़ार का जादू तब सिर चढ़ता है जब मन खाली हो। मन में निश्चित भाव ने होने के कारण ग्राहक हर वस्तु को अच्छा समझता है तथा अधिक आराम व शान के लिए गैर ज़रूरी चीज़े खरीदता है। इस तरह वह जादू की गिरफ्त में आ जाता है। वस्तु खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि फैंसी चीज़ें आराम में मदद नहीं करतीं, बल्कि खलल उत्पन्न करती हैं। इससे वह झुँझलाता है, परंतु उसके स्वाभिमान को सेंक मिल जाती है।

4. 'बाज़ार दर्शन' पाठ का प्रतिपाद्य बताइए?

उत्तर- 'बाज़ार दर्शन' निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभ लालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख भी उपभोक्तावाद व बाज़ारवाद को समझाने में बेजोड़ है। लेखक अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाज़ार की जादुई ताकत मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाज़ार

का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत, बाज़ार की चमक-दमक में फँसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं। लेखक ने कहीं दार्शनिक अंदाज़ में तो कहीं किस्सागों की तरह अपनी बात समझाने की कोशिश की है। इस क्रम में उन्होंने बाज़ार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र बताया है।

5. बाज़ार दर्शन' से क्या आभिप्राय है?

उत्तर- 'बाज़ार दर्शन' से अभिप्राय है- बाज़ार के बारे में बताना। लेखक ने बाज़ार की प्रवृत्ति, ग्राहक के प्रकार, आधुनिक ग्राहकों की सोच आदि के बारे में पाठकों को बताया है।

1

6. बाज़ार का जादू किन पर चलता है और क्यों?

उत्तर- बाज़ार का जादू उन लोगों पर चलता है जो खाली मन के होते हैं तथा जेब भरी होती हैं। ऐसे लोगों को अपने ज़रूरत का पता ही नहीं होगा। वे 'पर्चेज़िंग पावर' को दिखाने के लिए अनाप-शनाप वस्तुएँ खरीदते हैं ताकि लोग उन्हें बड़ा समझें। ऐसे व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान नहीं करते।

7. 'पैसा पावर है' -लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- लेखक ने पैसे को पावर कहा है क्योंकि यह क्रय-शक्ति को बढ़ावा देता है। इसके होने पर ही व्यक्ति नयी-नयी चीज़ें खरीदता है। दूसरे यदि व्यक्ति सिर्फ धन ही जोड़ता रहे तो वह इस बैंक-बैलेंस को देखकर गर्व से फूला रहता है। पैसे से समाज में व्यक्ति का स्थान निर्धारित होता है। इसी कारण लेखक ने पैसे को पावर कहा है।

8. भगत जी बाज़ार को सार्थक व समाज को शांत कैसे कर रहे हैं? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर- भगत जी निम्नलिखित तरीके से बाज़ार को सार्थक व समाज को शांत कर रहे हैं-

(i) वे निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिए निकलते हैं।

(ii) छह आने की कमाई होते ही बचे चूरन को बच्चों में मुफ्त बाँट देते हैं।

(iii) बाज़ार में जीरा व नमक खरीदते हैं।

(iv) बाज़ार के आकर्षण से दूर रहते हैं।

(v) अपने चूर्ण का व्यावसायिक तौर पर उत्पादन नहीं करते।

9. खाली मन तथा भरी जेब से लेखक का क्या आशय है? ये बातें बाज़ार को कैसे प्रभावित करती हैं?

उत्तर- खालीमन तथा जेब भरी होने से लेखक का आशय है- मन में किसी निश्चित वस्तु को खरीदने की इच्छा न होना तथा वस्तु की आवश्यकता न होना परंतु जेबें भरी होती है। इस कारण व्यक्ति आकर्षण के वशीभूत होकर वस्तुएँ खरीदता है। इससे बाज़ारवाद को बढ़ावा मिलता है।

10. बाज़ार दर्शन के आधार पर 'पैसे की व्यंग्य शक्ति' कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पैसे में व्यंग्यशक्ति होती है। पैदल व्यक्ति के पास से धूल उड़ाती मोटर चली जाए तो व्यक्ति परेशान हो उठता है। वह अपने जन्म तक को कोसता है। परंतु यह व्यंग्य चूरन वाले व्यक्ति पर कोई असर नहीं करता। लेखक ऐसे बल के विषय में कहता है कि यह कुछ अपर जाति का तत्व है। कुछ लोग इसे आत्मिक, धार्मिक व नैतिक कहते हैं।

11. 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर 'बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बाज़ार दर्शन के आधार पर 'बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने' का आशय है-बाज़ार के तड़क-भड़क और रूप-सौंदर्य से जब ग्राहक खरीददारी करने को मज़बूर हो जाता है तो उसे बाज़ार का जादू कहते हैं। बाज़ार का जादू तब सिर चढ़ता है जब मन खाली हो। मन में निश्चित भाव न होने के कारण ग्राहक हर वस्तु को अच्छा समझता है तथा अधिक आराम व शान के ले गैर ज़रूरी चीज़ें खरीदता है। इस तरह वह जादू की गिरफ्त में आ जाता है। वस्तु खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि फैंसी चीज़ें आराम में मदद नहीं करती, बल्कि खलल उत्पन्न करती हैं।

<u>पाठ आधारित अन्य प्रश्नोत्तर</u>

1. पर्चेजिंग पावर किसे कहा गया है , बाजार पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर- पर्चेजिंग पावर का अर्थ है खरीदने की शक्ति। पर्चेजिंग पावर के घमंड में व्यक्ति दिखावे के लिए आवश्यकता से अधिक खरीदारी करता है और बाजार को शैतानी व्यंग्य-शक्ति देता है। ऐसे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं।

2. लेखक ने बाजार का जादू किसे कहा है , इसका क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर- बाजार की चमक-दमक के चुंबकीय आकर्षण को बाजार का जादू कहा गया है, यह जादू आंखों की राह कार्य करता है। बाजार के इसी आकर्षण के कारण ग्राहक सजी-धजी चीजों को आवश्यकता न होने पर भी खरीदने को विवश हो जाते हैं।

3. आशय स्पष्ट करें।

- **मन खाली होना**
- **मन भरा होना**
- **मन बंद होना**

उत्तर- मन खाली होना- मन में कोई निश्चित वस्तु खरीदने का लक्ष्य न होना। निरुद्देश्य बाजार जाना और व्यर्थ की चीजों को खरीदकर लाना।

मन भरा होना- मन लक्ष्य से भरा होना। जिसका मन भरा हो वह भलीभाँति जानता है कि उसे बाजार से कौन सी वस्तु खरीदनी है, अपनी आवश्यकता की चीज खरीदकर वह बाजार को सार्थकता प्रदान करता है।

मन बंद होना- मन में किसी भी प्रकार की इच्छा न होना अर्थात अपने मन को शून्य कर देना।

4. 'जहाँ तृष्णा है , बटोर रखने की स्पृहा है , वहाँ उस बल का बीज नहीं है।' यहां किस बल की चर्चा की गयी है ?

उत्तर- लेखक ने संतोषी स्वभाव के व्यक्ति के आत्मबल की चर्चा की है। दूसरे शब्दों में यदि मन में संतोष हो तो व्यक्ति दिखावे और ईष्ट्या की भावना से दूर रहता है उसमें संचय करने की प्रवृति नहीं होती।

5. अर्थशास्त्र , अनीतिशास्त्र कब बन जाता है ?

उत्तर- जब बाजार में कपट और शोषण बढ़ने लगे, खरीददार अपनी पर्चेचिंग पावर के घमंड में दिखावे के लिए खरीददारी करें। मनुष्यों में परस्पर भाईचारा समाप्त हो जाए खरीददार और दुकानदार एक दूसरे को ठगने की घात में लगे रहें, एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखाई दे तो बाजार का अर्थशास्त्र, अनीतिशास्त्र बन जाता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना है।

6. भगतजी बाजार और समाज को किस प्रकार सार्थकता प्रदान कर रहे हैं ?

उत्तर- भगतजी के मन में सांसारिक आकर्षणों के लिए कोई तृष्णा नहीं है। वे संचय, लालच और दिखावे से दूर रहते हैं। बाजार और व्यापार उनके लिए आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र है। भगतजी के मन का संतोष और निस्पृह भाव, उनको श्रेष्ठ उपभोक्ता और विक्रेता बनाते हैं।

7. भगत जी के व्यक्तित्व के सशक्त पहलुओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- निम्नाकिंत बिंदु उनके व्यक्तित्व के सशक्त पहलू को उजागर करते हैं।

- पंसारी की दुकान से केवल अपनी जरूरत का सामान (जीरा और नमक) खरीदना।
- निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिए निकलना।
- छह आने की कमाई होते ही चूरन बेचना बंद कर देना।
- बचे हुए चूरन को बच्चों को मुफ्त बाँट देना।
- सभी काजय-जय राम कहकर स्वागत करना।
- बाजार की चमक-दमक से आकर्षित न होना।
- समाज को संतोषी जीवन की शिक्षा देना।

8. बाजार की सार्थकता किसमें है ?

उत्तर- मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में ही बाजार की सार्थकता है। जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीद... वे बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं। जो विक्रेता, ग्राहकों का शोषण नहीं करते और छल-कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नही करते वे भी बाजार को सार्थक बनाते हैं।

<u>गद्यांश-आधारित अर्थ-ग्रहण संबंधित प्रश्नोत्तर</u>

बाजार मे एक जादू है। वह जादू आँख की तरह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे

ही इस जादू की भी मर्यादा है जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ वह भी लूँ। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी-चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को जरूर सेंक मिल जाता है पर इससे अभिमान को गिल्टी की खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ देगी?

पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा उपाय है वह यह कि बाजार जाओ तो खाली मन न हो। मन खाली हो तब बाजार न जाओ कहते हैं, लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य से भरा हो तो बाजार फैला का फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ न कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

1. बाजार के जादूको लेखक ने कैसे स्पष्ट किया है ?

उत्तर- बाजार के रूप का जादू आँखों की राह से काम करता हुआ हमें आकर्षित करता है। बाजार का जादू ऐसे चलता है जैसे लोहे के ऊपर चुंबक का जादू चलता है। चमचमाती रोशनी में सजी फैसी चीजें ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इसी चुम्बकीय शक्ति के कारण व्यक्ति फिजूल सामान को भी खरीद लेता है।

2. जेब भरी हो और मन खाली तो हमारी क्या दशा होती है ?

उत्तर- जेब भरी हो और मन खाली हो तो हमारे ऊपर बाजार की जादू खूब असर करता है। मन, खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण मन तक पहुँचे जाता है और उस समय यदि जेब भरी हो तो मन हमारे नियंत्रण में नहीं रहता।

3. फैसी चीजों की बहुतायत का क्या परिणाम होता हैं ?

उत्तर- फैंसी चीजें आराम की जगह आराम में व्यवधान ही डालती है। थोड़ी देर को अभिमान को जरूर सेंक मिल जाती है पर दिखावे की प्रवृति में वृद्धि होती है।

4. जादू की जकड़ से बचने का क्या उपाय है ?

उत्तर- जादू की जकड़ से बचने के लिए एक ही उपाय है, वह यह है कि बाजार जाओ तो मन खाली न हो, मन खाली हो तो बाजार मत जाओ।

सीबीएसई कक्षा -12 हिंदी कोर

महत्वपूर्ण प्रश्न

पाठ – 01

हरिवंशराय बच्चन (आत्मपरिचय)

<u>महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर</u>

1. 'आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवंशराय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के किन पक्षों को उभारा है?

उत्तर- आत्मपरिचय कविता में कवि हरिवंशराय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के निम्नलिखित पक्षों को उभारा है-

(i) कवि अपने जीवन में मिली आशाओं-निराशाओं से संतुष्ट है |

(ii) वह (कवि) अपनी धुन में मस्त रहने वाला व्यक्ति है |

(iii) कवि संसार को मिथ्या समझते हुए हानि-लाभ, यश-अपयश, सुख-दुख को समान समझता है |

(iv) कवि संतोषी प्रवृत्ति का है | वह वाणी के माध्यम से अपना आक्रोश प्रकट करता है |

2. 'आत्मपरिचय' कविता पर प्रतिपाद्य लिखिए |

उत्तर- कवि का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानसे से ज्यादा कठिन है| समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा तो होता ही है | संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं | दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता क्योंकि उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है | वह अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्विधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है | वह पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रितिकलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है |

3. 'आत्मपरिचय' कविता को दृष्टि में रखते हुए कवि के क्ति को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए |

उत्तर- कवि कहता है कि यद्यपि वह संसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है | वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है | वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं | वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है | कवि संतोषी प्रवृत्ति का है | वह अपनी वाणी के जरिए अपना आक्रोश व्यक्त करता है | उसकी व्यथा शब्दों के माध्यम से प्रकाट होती है तो संसार उसे गाना मानता है | वह संसार को अपने गीतों, द्वंद्वों के माध्यम से प्रसन्न करने का प्रयास करता है | कवि सभो को समांजस्य बनाए रखने के लिए कहता है |

4. कवि को संसार अपूर्ण क्यों लगता है?

Dr. Manish Kumar Dubey

उत्तर- कवि भावनाओं को प्रमुखता देता है | वह संसारिक बन्धनों को नहीं मानता | वह वर्तमान संसार को उसकी शुष्कता एवं नीरसता के कारण नापसंद करता है | बार-बार वह अपनी कल्पना का संसार बनाता है तथा प्रेम में बाधक बनने पर उन्हें मिटा देता है | वह प्रेम को सम्मान देने वाले संसार की रचना करना चाहता है |

5. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिजिएः

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,

मैं कभी न जग का ध्यान करता हूँ,

जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,

मैं अपने मन का गान किया करता हूँ |

मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ,

मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ,

है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता

मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ |

(क) कवि ने स्नेह को सूरा क्यों कहा है? संसार के प्रति उसके नकारात्मक दृष्टिकोण का क्या कारण है?

(ख) संसार किनको महत्व देता है? कवि को वह महत्व क्यों नहीं दिया जाता?

(ग) 'उद्‌गार' और 'उपहार' कवि को क्यों प्रिय हैं?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिएः

है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता

मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ |

उत्तर- (क) कवि ने स्नेह को सुरा इसलिए कहा है क्योंकि वह प्रेम की मादकता में डूब जाता है | इस मादकता के कारण उसे सांसारिक कष्टों की परवाह नहीं रह जाती है |

(ख) संसार उन लोगों को महत्व देता है जो सांसारिकता में डूबे रहते हैं और सांसारिकताको ही सर्वोत्तम मानते हैं | कवि सांसारिकता से दूर रहता है, इसलिए संसार कवि को महत्व नहीं देता है |

(ग) कवि को उद्‌गार इसलिए पसंद है क्योंकि इस उद्‌गार में उसके मन के भाव समाए हैं, जिन्हें वह दुनिया को देना चाहते हैं | उसे